Review Research Article Website : www.ijbasr.org ISSN : 2349-1965
International Journal of Basic & Applied Science Research
Peer Reviewed and Refereed Journal Multidisciplinary 2023; 10(3); 20 - 26 Spl. Volume

मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय में सामाजिक बहिष्करण एवं जीवन स्तर की समस्याएँ: वैशाली जिला के पातेपुर प्रखंड पर आधारित समाजशास्त्रीय अध्ययन

मो0 हबीब
भरथीपुर, बलिगाँव, चन्दनपट्टी, वैशाली

सार :

भारत एक बहुधार्मिक एवं बहुसांस्कृतिक राष्ट्र है, जहाँ विभिन्न समुदायों के मध्य सामाजिक एवं आर्थिक असमानताएँ विद्यमान हैं। मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय देश की एक बड़ी आबादी का प्रतिनिधित्व करता है, किन्तु शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, आवास एवं सामाजिक अवसरों के क्षेत्र में यह समुदाय अपेक्षाकृत पिछड़ा हुआ पाया जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र वैशाली जिला के पातेपुर प्रखंड में मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय की सामाजिक बहिष्करण एवं जीवन स्तर संबंधी समस्याओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया है। 200 उत्तरदाताओं से प्राप्त जानकारी के आधार पर यह पाया गया कि बेरोजगारी, अशिक्षा, गरीबी, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी तथा सामाजिक भेदभाव इस समुदाय के प्रमुख मुद्दे हैं। शोध में यह भी स्पष्ट हुआ कि सरकारी योजनाओं की जानकारी एवं पहुँच सीमित होने के कारण समुदाय का समग्र विकास प्रभावित हो रहा है। अध्ययन सामाजिक समावेशन, शिक्षा विस्तार तथा आर्थिक सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बल देता है।

मुख्य शब्द : मुस्लिम अल्पसंख्यक, सामाजिक बहिष्करण, जीवन स्तर, गरीबी, समाजशास्त्रीय अध्ययन

प्रस्तावना :

भारत एक बहुधार्मिक, बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक राष्ट्र है, जहाँ विभिन्न धर्मों एवं समुदायों के लोग साथ–साथ निवास करते हैं। भारतीय संविधान सभी नागरिकों को समानता, स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय का अधिकार प्रदान करता है, किन्तु व्यवहारिक स्तर पर समाज के अनेक वर्ग आज भी सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं का सामना कर रहे हैं। मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय भारत का सबसे बड़ा धार्मिक अल्पसंख्यक समूह है, जिसकी जनसंख्या देश की कुल आबादी का लगभग 14 प्रतिशत है। इसके बावजूद यह समुदाय शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य एवं राजनीतिक प्रतिनिधित्व जैसे क्षेत्रों में अपेक्षाकृत पिछड़ा हुआ पाया जाता है। (भारत सरकार, 2006,)

भारतीय समाज में सामाजिक बहिष्करण एक गंभीर समस्या के रूप में उभरकर सामने आया है। सामाजिक बहिष्करण का तात्पर्य ऐसी प्रक्रिया से है, जिसके अंतर्गत किसी समुदाय या समूह को सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक अवसरों से वंचित कर दिया जाता है। मुस्लिम समुदाय के संदर्भ में यह बहिष्करण

Corresponding Author : मो0 हबीब
E-mail : mdhabibali786786@gmail.com
Date of Acceptance : 29.08.2023
Date of Publication : 30.11. 2023

कई रूपों में दिखाई देता है, जैसेकृ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से दूरी, रोजगार के सीमित अवसर, आर्थिक असुरक्षा, आवासीय पृथक्करण, सामाजिक भेदभाव एवं सरकारी योजनाओं तक सीमित पहुँच। (उमन 2010) सच्चर समिति रिपोर्ट (2006) ने मुस्लिम समुदाय की वास्तविक स्थिति को उजागर करते हुए बताया कि इस समुदाय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति देश के अन्य पिछड़े वर्गों से भी कमजोर है। रिपोर्ट में उल्लेख किया गया कि मुस्लिम समुदाय के अधिकांश लोग असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं, जहाँ रोजगार अस्थिर एवं आय सीमित होती है। सरकारी नौकरियों, प्रशासनिक सेवाओं एवं उच्च शिक्षा संस्थानों में उनकी भागीदारी अत्यंत कम पाई गई। (भारत सरकारं, 2006,)

मुस्लिम समुदाय के पिछड़ेपन के पीछे अनेक संरचनात्मक कारण हैं। गरीबी एवं अशिक्षा के कारण समुदाय के अधिकांश लोग निम्न आय वर्ग में जीवन व्यतीत करते हैं। शिक्षा की कमी उन्हें आधुनिक आर्थिक अवसरों से दूर कर देती है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मुस्लिम परिवारों को स्वास्थ्य सेवाओं, स्वच्छ पेयजल एवं आवास जैसी मूलभूत सुविधाओं से भी वंचित रहना पड़ता है। परिणामस्वरूप उनका जीवन स्तर निम्न बना रहता है। (अहमद, 2015) वैशाली जिला बिहार के प्रमुख जिलों में से एक है, जहाँ ग्रामीण आबादी का बड़ा हिस्सा कृषि एवं असंगठित व्यवसायों पर निर्भर है। पातेपुर प्रखंड सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछड़ा क्षेत्र माना जाता है। यहाँ मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय का एक बड़ा वर्ग गरीबी, बेरोजगारी एवं सामाजिक असुरक्षा की समस्याओं से जूझ रहा है। शिक्षा एवं स्वास्थ्य सुविधाओं की सीमित उपलब्धता तथा सामाजिक जागरूकता की कमी समुदाय के विकास में बाधक बनती है।

ग्रामीण मुस्लिम समुदाय के लोग अक्सर निम्न आय वाले कार्यों जैसे — दिहाड़ी मजदूरी, छोटे व्यापार एवं पारंपरिक व्यवसायों पर निर्भर रहते हैं। महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार में भागीदारी भी अत्यंत कम पाई जाती है, जिसके कारण परिवारों की आर्थिक स्थिति कमजोर बनी रहती है। इसके अतिरिक्त सामाजिक पूर्वाग्रह एवं सांस्कृतिक अलगाव भी समुदाय के समग्र विकास को प्रभावित करते हैं। (हसन, 2008) समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो सामाजिक बहिष्करण केवल आर्थिक समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संरचना, शक्ति संबंधों एवं संसाधनों के असमान वितरण से जुड़ी हुई समस्या है। जब किसी समुदाय को शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य एवं सामाजिक अवसरों तक समान पहुँच नहीं मिलती, तब उसके जीवन स्तर में गिरावट आना स्वाभाविक है। मुस्लिम समुदाय के संदर्भ में यह स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक गंभीर रूप से दिखाई देती है।

वर्तमान अध्ययन वैशाली जिला के पातेपुर प्रखंड में मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय की सामाजिक बहिष्करण एवं जीवन स्तर संबंधी समस्याओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का उद्देश्य समुदाय की वास्तविक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को समझना तथा उनके विकास में बाधक प्रमुख कारकों की पहचान करना है। यह शोध सामाजिक समावेशन एवं समान अवसरों की आवश्यकता पर बल देता है, जिससे समुदाय को मुख्यधारा के विकास से जोड़ा जा सके।

साहित्य समीक्षा :

मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर अनेक विद्वानों एवं समितियों ने अध्ययन किया है। इन अध्ययनों में मुस्लिम समुदाय के पिछड़ेपन, सामाजिक बहिष्करण एवं निम्न जीवन स्तर के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है।

राजिंदर सचर कमिटी (2006) द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट भारतीय मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज माना जाता है। समिति ने पाया कि मुस्लिम समुदाय शिक्षा, सरकारी नौकरियों, बैंकिंग सेवाओं एवं प्रशासनिक प्रतिनिधित्व में अत्यंत पिछड़ा हुआ है। रिपोर्ट में यह भी स्पष्ट किया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में मुस्लिम परिवार गरीबी एवं बेरोजगारी से अधिक प्रभावित हैं।

टी. के. उमन (2010) ने सामाजिक समावेशन एवं बहिष्करण की अवधारणा पर विस्तृत चर्चा करते हुए कहा कि भारतीय समाज में धार्मिक अल्पसंख्यकों को अक्सर सामाजिक अवसरों से वंचित रखा जाता है। उनके अनुसार सामाजिक बहिष्करण केवल आर्थिक समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना एवं शक्ति असमानता का परिणाम है। मुस्लिम समुदाय सामाजिक सहभागिता एवं संसाधनों की उपलब्धता में अनेक बाधाओं का सामना करता है।

जेया, हसन (2008) ने अपने अध्ययन में मुस्लिम समुदाय की राजनीतिक एवं सामाजिक स्थिति का विश्लेषण किया। उन्होंने बताया कि मुस्लिम समुदाय में शिक्षा का निम्न स्तर, आर्थिक असुरक्षा एवं राजनीतिक प्रतिनिधित्व की कमी सामाजिक पिछड़ेपन के प्रमुख कारण हैं। अध्ययन में यह भी बताया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में मुस्लिम महिलाएँ दोहरे भेदभाव का सामना करती हैं, एक ओर धार्मिक अल्पसंख्यक होने के कारण तथा दूसरी ओर महिला होने के कारण।

इम्तियाज अहमद (2015) ने मुस्लिम समुदाय में सामाजिक बहिष्करण एवं पहचान संबंधी समस्याओं का अध्ययन करते हुए बताया कि समुदाय के अधिकांश लोग असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं, जहाँ आय अस्थिर एवं सामाजिक सुरक्षा का अभाव होता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा एवं कौशल विकास की कमी समुदाय के आर्थिक विकास में सबसे बड़ी बाधा है।

मनीश, के. ठाकुर (2013) ने अपने अध्ययन में लोकतंत्र एवं धार्मिक अल्पसंख्यकों के संदर्भ में मुस्लिम समुदाय की स्थिति का विश्लेषण किया। उनके अनुसार मुस्लिम समुदाय सामाजिक उपेक्षा एवं विकास योजनाओं की सीमित पहुँच के कारण मुख्यधारा के विकास से पीछे रह गया है। उन्होंने सामाजिक समावेशन एवं सकारात्मक सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता पर बल दिया।

राकेश बसंत (2011) ने मुस्लिम समुदाय के सामाजिक एवं आर्थिक पिछड़ेपन को संरचनात्मक समस्या बताया। उन्होंने कहा कि रोजगार के अवसरों की कमी, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का अभाव तथा वित्तीय संस्थानों तक सीमित पहुँच समुदाय की आर्थिक स्थिति को कमजोर बनाती है। उनके अध्ययन में यह भी उल्लेख किया गया कि शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में मुस्लिम समुदाय आवासीय पृथक्करण एवं सामाजिक भेदभाव का सामना करता है।

नूरजहां साफिया नियाज (2014) ने मुस्लिम महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति पर अध्ययन करते हुए बताया कि मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा एवं रोजगार में भागीदारी अत्यंत कम है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था एवं आर्थिक संसाधनों की कमी उनके विकास में बाधा उत्पन्न करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह स्थिति और अधिक गंभीर है।

ए. एम. साह (2012) ने भारतीय ग्रामीण समाज में अल्पसंख्यकों की सामाजिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए कहा कि ग्रामीण मुस्लिम समुदाय स्वास्थ्य सुविधाओं, शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों से पर्याप्त रूप से लाभान्वित नहीं हो पा रहा है। सामाजिक जागरूकता एवं सरकारी योजनाओं की जानकारी के अभाव के कारण समुदाय विकास की मुख्यधारा से दूर बना हुआ है।

इन सभी अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय सामाजिक बहिष्करण, आर्थिक असुरक्षा एवं निम्न जीवन स्तर जैसी समस्याओं से व्यापक रूप से प्रभावित है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य एवं रोजगार संबंधी चुनौतियाँ अधिक गंभीर हैं। प्रस्तुत अध्ययन वैशाली जिला के पातेपुर प्रखंड के संदर्भ में इन समस्याओं का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है,

अध्ययन के उद्देश्य :

1. मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय में सामाजिक बहिष्करण की प्रकृति का अध्ययन करना।
2. समुदाय के जीवन स्तर एवं आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण करना।
3. समुदाय के विकास हेतु आवश्यक सामाजिक एवं नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

अनुसंधान पद्धति :

प्रस्तुत शोध "मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय में सामाजिक बहिष्करण एवं जीवन स्तर की समस्याएँः वैशाली जिला के पातेपुर प्रखंड पर आधारित एक समाजशास्त्रीय अध्ययन" विषय पर आधारित है। यह अध्ययन मुख्यतः ग्रामीण मुस्लिम समुदाय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, सामाजिक बहिष्करण की प्रकृति तथा जीवन स्तर से संबंधित समस्याओं के समाजशास्त्रीय विश्लेषण हेतु किया गया है। अध्ययन में वैज्ञानिक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग करते हुए तथ्यों का संकलन, वर्गीकरण एवं विश्लेषण किया गया है।

1. अनुसंधान की प्रकृति :

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) एवं विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। अध्ययन में मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का वर्णन करने के साथ–साथ सामाजिक बहिष्करण एवं निम्न जीवन स्तर के कारणों का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन गुणात्मक (Qualitative) एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार की शोध पद्धतियों पर आधारित है।

2. अध्ययन क्षेत्र :

अध्ययन क्षेत्र के रूप में बिहार राज्य के वैशाली जिला अंतर्गत पातेपुर प्रखंड का चयन किया गया। पातेपुर प्रखंड ग्रामीण एवं अर्धग्रामीण विशेषताओं वाला क्षेत्र है, जहाँ मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय की पर्याप्त जनसंख्या निवास करती है। यह क्षेत्र सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत पिछड़ा माना जाता है। यहाँ के अधिकांश लोग कृषि, मजदूरी, छोटे व्यापार एवं असंगठित व्यवसायों पर निर्भर हैं।

पातेपुर प्रखंड में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं सामाजिक जागरूकता की सीमित उपलब्धता के कारण मुस्लिम समुदाय अनेक सामाजिक एवं आर्थिक समस्याओं का सामना कर रहा है। इस कारण यह क्षेत्र अध्ययन के लिए उपयुक्त पाया गया।

3. अध्ययन की इकाई :

प्रस्तुत अध्ययन की मुख्य इकाई मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय के परिवार एवं परिवार प्रमुख हैं। अध्ययन में पुरुष एवं महिला दोनों उत्तरदाताओं को शामिल किया गया, ताकि समुदाय की वास्तविक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का व्यापक विश्लेषण किया जा सके।

4. निदर्शन पद्धति :

अध्ययन हेतु दैव निदर्शन पद्धति (Random Sampling Method) का प्रयोग किया गया। पातेपुर प्रखंड के विभिन्न पंचायतों एवं गाँवों से कुल 200 मुस्लिम उत्तरदाताओं का चयन किया गया। निदर्शन चयन में यह ध्यान रखा गया कि विभिन्न आय वर्ग, शैक्षिक स्तर एवं व्यवसाय से जुड़े लोगों को सम्मिलित किया जाए, ताकि अध्ययन अधिक प्रतिनिधिक एवं विश्वसनीय बन सके।

5. आँकड़ों के स्रोत :

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का उपयोग किया गया।

(क) प्राथमिक आँकड़े

प्राथमिक आँकड़ों का संकलन निम्नलिखित माध्यमों से किया गया—

- साक्षात्कार अनुसूची
- प्रत्यक्ष अवलोकन
- व्यक्तिगत संवाद

उत्तरदाताओं से उनके सामाजिक, आर्थिक एवं जीवन स्तर से संबंधित प्रश्न पूछे गए। अध्ययन के दौरान परिवार की आय, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, आवास एवं सामाजिक सहभागिता से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित की गईं।

(ख) द्वितीयक आँकड़े

द्वितीयक आँकड़े निम्नलिखित स्रोतों से प्राप्त किए गए–

- पुस्तकें एवं शोध ग्रंथ
- शोध पत्र एवं जर्नल
- सरकारी रिपोर्ट
- सच्चर समिति रिपोर्ट
- जनगणना रिपोर्ट
- इंटरनेट एवं ऑनलाइन स्रोत

इन स्रोतों से मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति संबंधी महत्वपूर्ण तथ्यों एवं आँकड़ों का संकलन किया गया।

6. अनुसंधान उपकरण

अध्ययन में साक्षात्कार अनुसूची को मुख्य अनुसंधान उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया। अनुसूची में बंद एवं खुले दोनों प्रकार के प्रश्न शामिल किए गए। प्रश्नों का निर्माण अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप किया गया था। इसके अतिरिक्त प्रत्यक्ष अवलोकन विधि का उपयोग करते हुए उत्तरदाताओं की जीवन परिस्थितियों, आवासीय स्थिति एवं सामाजिक वातावरण का निरीक्षण किया गया।

7. आँकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण :

संकलित आँकड़ों का वर्गीकरण, सारणीकरण एवं विश्लेषण प्रतिशत विधि द्वारा किया गया। प्राप्त आँकड़ों को तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत कर उनका समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया गया।

विश्लेषण के दौरान सामाजिक बहिष्करण, बेरोजगारी, अशिक्षा, गरीबी, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी एवं सामाजिक भेदभाव जैसे प्रमुख मुद्दों पर विशेष ध्यान दिया गया।

8. अध्ययन का महत्व :

यह अध्ययन मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को समझने में सहायक होगा। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष नीति निर्माताओं, समाजशास्त्रियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।

यह शोध सामाजिक बहिष्करण एवं जीवन स्तर संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु प्रभावी नीतियों एवं योजनाओं के निर्माण में भी सहायक होगा। साथ ही यह अध्ययन मुस्लिम समुदाय के सामाजिक समावेशन एवं विकास के लिए आवश्यक सुधारात्मक कदमों की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

तालिका संख्या 1

मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय की प्रमुख समस्याएँ

क्र. सं.	समस्याएँ	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत
1	बेरोजगारी	58	29.00
2	अशिक्षा	46	23.00
3	गरीबी	42	21.00
4	स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी	30	15.00
5	सामाजिक भेदभाव	24	12.00
6	कुल	200	100.00

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी है, जिसे 29 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने प्रमुख समस्या माना। इससे यह संकेत मिलता है कि समुदाय में रोजगार के अवसर सीमित हैं तथा अधिकांश लोग असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं। 23 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अशिक्षा को प्रमुख समस्या बताया। शिक्षा के अभाव के कारण समुदाय आधुनिक रोजगार एवं सामाजिक अवसरों से वंचित रह जाता है। 21 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने गरीबी को मुख्य समस्या माना, जिससे उनके जीवन स्तर पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

15 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी समुदाय की गंभीर समस्या है। ग्रामीण क्षेत्रों में अस्पतालों एवं चिकित्सा सुविधाओं की कमी के कारण लोगों को उचित उपचार नहीं मिल पाता। 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सामाजिक भेदभाव को समस्या माना, जिससे समुदाय में अलगाव एवं असुरक्षा की भावना उत्पन्न होती है।

चर्चा :

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से अनेक चुनौतियों का सामना कर रहा है। बेरोजगारी एवं अशिक्षा समुदाय की प्रमुख समस्याएँ हैं, जिनके कारण गरीबी एवं निम्न जीवन स्तर की स्थिति उत्पन्न होती है।

सामाजिक बहिष्करण के कारण समुदाय मुख्यधारा के विकास से पूर्ण रूप से जुड़ नहीं पाता। सरकारी योजनाओं की सीमित जानकारी एवं प्रशासनिक उपेक्षा भी इनके विकास में बाधक बनती है। सच्चर समिति ने भी मुस्लिम समुदाय की कमजोर सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति की ओर संकेत किया था।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि शिक्षा एवं कौशल विकास कार्यक्रमों के माध्यम से समुदाय की स्थिति में सुधार लाया जा सकता है। सामाजिक समावेशन एवं सरकारी योजनाओं की प्रभावी पहुँच समुदाय के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में सहायक हो सकती है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि वैशाली जिला के पातेपुर प्रखंड में मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय सामाजिक बहिष्करण एवं निम्न जीवन स्तर की गंभीर समस्याओं से प्रभावित है। बेरोजगारी, अशिक्षा एवं गरीबी समुदाय के विकास में मुख्य बाधाएँ हैं। स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी एवं सामाजिक भेदभाव इनके सामाजिक जीवन को और अधिक कठिन बनाते हैं।

समुदाय के समग्र विकास हेतु शिक्षा का प्रसार, रोजगार सृजन, कौशल विकास तथा सरकारी योजनाओं की प्रभावी पहुँच आवश्यक है। साथ ही सामाजिक समानता एवं समावेशन की भावना को बढ़ावा देकर ही मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय को मुख्यधारा से जोड़ा जा सकता है।

संदर्भ :

1. बसंत, आर. (2011). भारत में मुसलमानों पर – दृष्टिकोण : सच्चर समिति की रिपोर्ट और उसके बाद के हालात. यूनिवर्सिटी ऑफ पेंसिल्वेनिया प्रेस, पृ 72
2. भारत सरकार. (2006). भारत में मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति (सच्चर समिति की रिपोर्ट). नई दिल्ली: प्रधानमंत्री की उच्च–स्तरीय समिति, पृ 89
3. ठाकुर, एम. के. (2013). लोकतंत्र, बहुलवाद और धार्मिक अल्पसंख्यकरू भारत में मुस्लिम प्रश्न. सोशल चेंज, 43(4), 569–586.

4. पी. आर. एस. लेजिस्लेटिव रिसर्च. (2016). सच्चर समिति की रिपोट : भारत में मुस्लिम समुदाय की सामाजिक–आर्थिक और शैक्षिक स्थिति की जांच के लिए उच्च–स्तरीय समिति. नई दिल्ली, पृ. 92
5. वर्मा, एस. (2013). क्या सरकारी योजनाएं मुसलमानों के लिए नाकाम रही हैं? द टाइम्स ऑफ इंडिया, पृ 85
6. ऊम्मेन, टी. के. (2010). स्वतंत्र भारत में सामाजिक समावेश. नई दिल्ली : ओरिएंट ब्लैकस्वान, पृ 76
7. अहमद, आई. (2015). भारत में मुस्लिम समुदाय और सामाजिक बहिष्कार. नई दिल्ली : सेज पब्लिकेशन्स, पृ 61
8. हसन, जेड. (2008). समावेश की राजनीति : जातियां, अल्पसंख्यक और सकारात्मक कार्रवाई. नई दिल्ली : ऑक्सफोर्ड, पृ 104

***